आज्ञाकारी जैक

एक प्राचीन कथा

लेखक : पॉल

आज्ञाकारी जैक

एक प्राचीन कथा

पुराने ज़माने में जैक नाम का एक लड़का था.
वो अपनी विधवा माँ के साथ एक छोटे घर में रहता था.
उनका घर जंगल से बिल्कुल लगा हुआ था.
वो इतने गरीब थे कि उन्हें दो वक्त का खाना भी नसीब नहीं होता था. जैसे-जैसे जैक बड़ा हुआ उसकी खुराक बढ़ने लगी और उनकी हालत बद से बदतर हुई.

अंत में एक दिन माँ ने जैक से कहा, "जैक अब तुम मेहनत-मज़दूरी करके अपना खुद पेट भरो."

"ठीक है, माँ, आप जो कहेंगी मैं
वही करूंगी," जैक ने हामी भरी.

अगले दिन जैक बाहर गया और उसने पड़ोस के
किसान के खेत पर दिन भर काम किया.

शाम को किसान ने जैक को
दिन की दिहाड़ी की एक पैनी दी.

जैक के कपड़ों में कोई जेब नहीं थी, क्योंकि उसने
पहले कभी पैसे इस्तेमाल ही नहीं किए थे.
जब वो घर की ओर ऊंची घास में चला,
तब उसकी पैनी कहीं गिर गई.
ऊंची घास में वो उसे ढूंढें नहीं मिली.

जैसे ही जैक घर में घुसा, माँ उस पर चिल्लाई,
"बेवकूफ! तुम्हें दिहाड़ी में मिली पैनी को
अपनी जेब में रखना चाहिए था."

"माफ़ करो माँ!
अगली बार मैं वही करूंगा."

अगले दिन जैक को एक डेरी में काम मिला.
शाम को किसान ने जैक को एक जग दूध दिया.
आज्ञाकारी जैक ने दूध के जग को अपनी जेब में रखा
और फिर वो घर की तरफ चला.
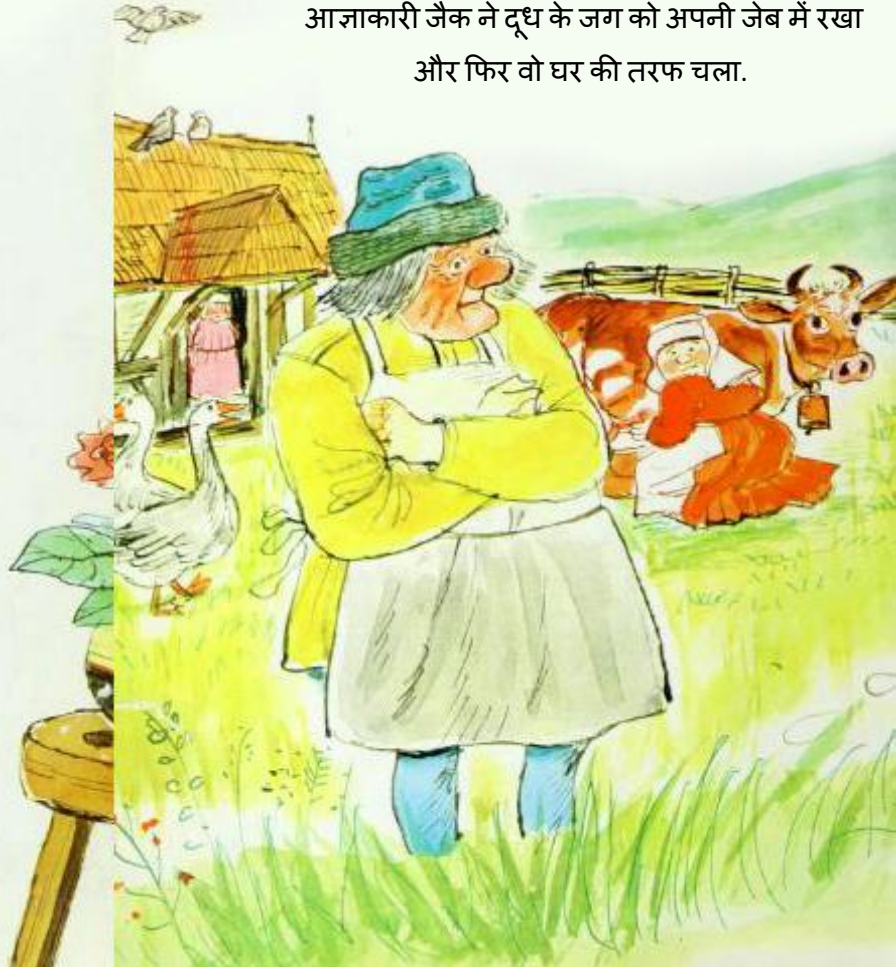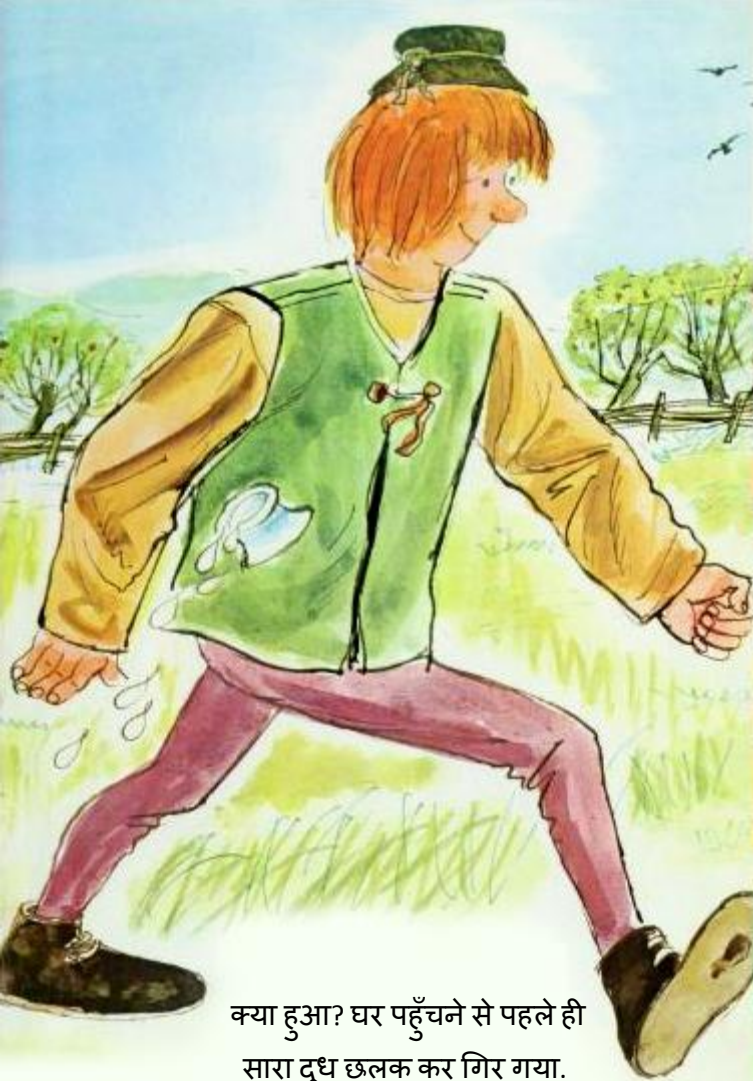
क्या हुआ? घर पहुँचने से पहले ही
सारा दूध छलक कर गिर गया.

"तुम बिल्कुल उल्लू
हो," माँ ने कहा,
"तुम्हें दूध के बर्तन को
अपने सर पर रखकर
लाना चाहिए था."

"ठीक है माँ!
अगली बार मैं
बिल्कुल वही करूंगा."

अगले दिन दूधवाले ने जैक को दुबारा नौकरी पर रखा. शाम को उसने जैक को वेतन में आधा किलो मक्खन दिया. आज्ञाकारी जैक ने मक्खन को अपने सर पर रखा, उसके ऊपर टोपी पहनी और फिर घर की ओर चला.
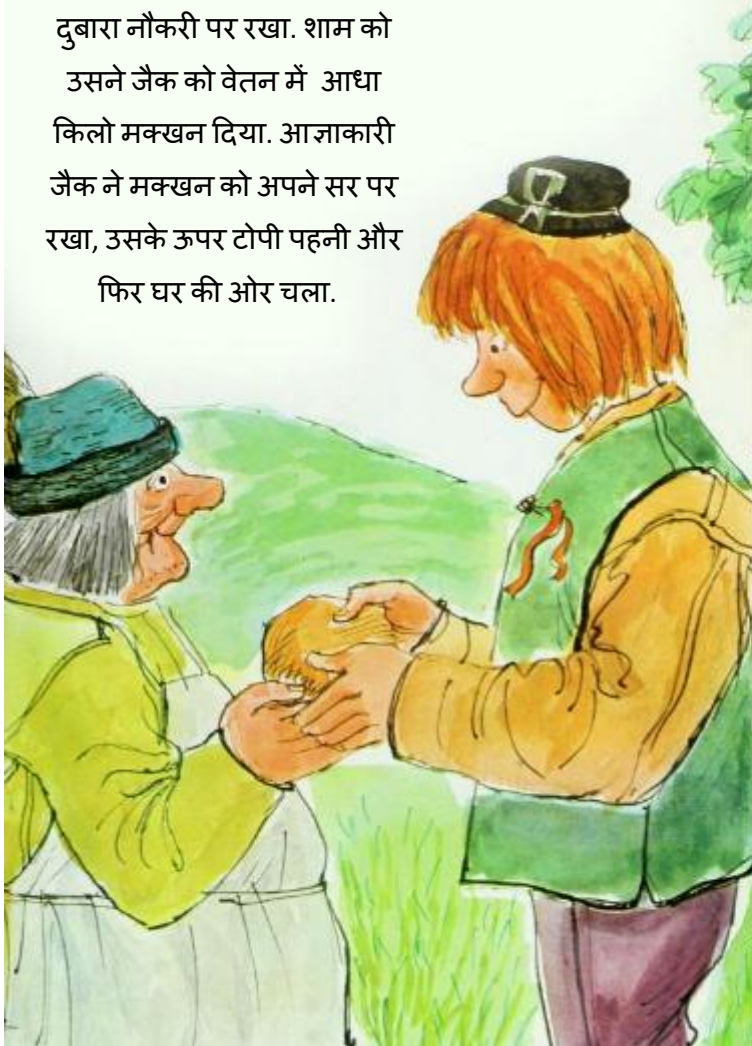
उस दिन काफी गर्मी थी और धीरे-धीरे मक्खन पिघलने लगा. घर पहुँचते-पहुँचते जैक के बाल, चेहरा और जैकेट पिघले हुए मक्खन से पीले हो गए.

"तीन दिन की मेहनत और हाथ में फूटी कौड़ी तक नहीं!" जैक की माँ चिल्लाई.

"तुम्हें मक्खन को हरे गीले पत्तों में लपेटकर उसे अपने हाथ में उठा कर लाना चाहिए था," माँ ने कहा.

"माफ़ करो माँ! अगली बार मैं
तुम्हारे बताए अनुसार ही करूंगा."

घर पहुँचने पर जब जैक ने माँ को पूरी बात बताई तो माँ को बहुत गुस्सा आया. माँ चिल्लाईं, "तुम्हें गले में रस्सी बांधकर उसे घर लाना चाहिए था."

अगले दिन जैक को एक बेकरी में काम मिला.
शाम को बेकर ने उसे पैसों के बदले एक काली बिल्ली दी.
जैक ने बिल्ली को गीली पत्तियों में लपेटने की भरसक कोशिश की.
पर बिल्ली ज़ोर से घुर्राई और पंजे मारती हुई भाग गई.
अपनी पूरी कोशिश के बावजूद जैक, बिल्ली को रोक नहीं पाया.

"माफ़ करो माँ! तुमने जो बताया है
अगली बार मैं वही करूंगा."

अगले दिन जैक को एक कसाई की दुकान में काम मिला.
शाम को कसाई ने जैक को मांस और हड्डी का एक बड़ा
टुकड़ा दिया. आज्ञाकारी जैक ने मांस को एक रस्सी से बाँधा
और फिर उसे खींचता हुआ घर चला.
पर रास्ते में भूखे कुत्तों ने उस मांस को खा डाला.

इस बार माँ का पारा आसमान पर चढ़ गया.

"तुम जैसे मूर्ख को भी इतनी तो समझ होनी चाहिए थी," माँ जैक पर चीखीं, "तुम्हें उसे अपने कंधे पर उठाकर लाना चाहिए था."

"एक बार और माफ़ करो माँ!
आज तुमने जो बताया है अगली
बार मैं वैसे ही करूंगा."
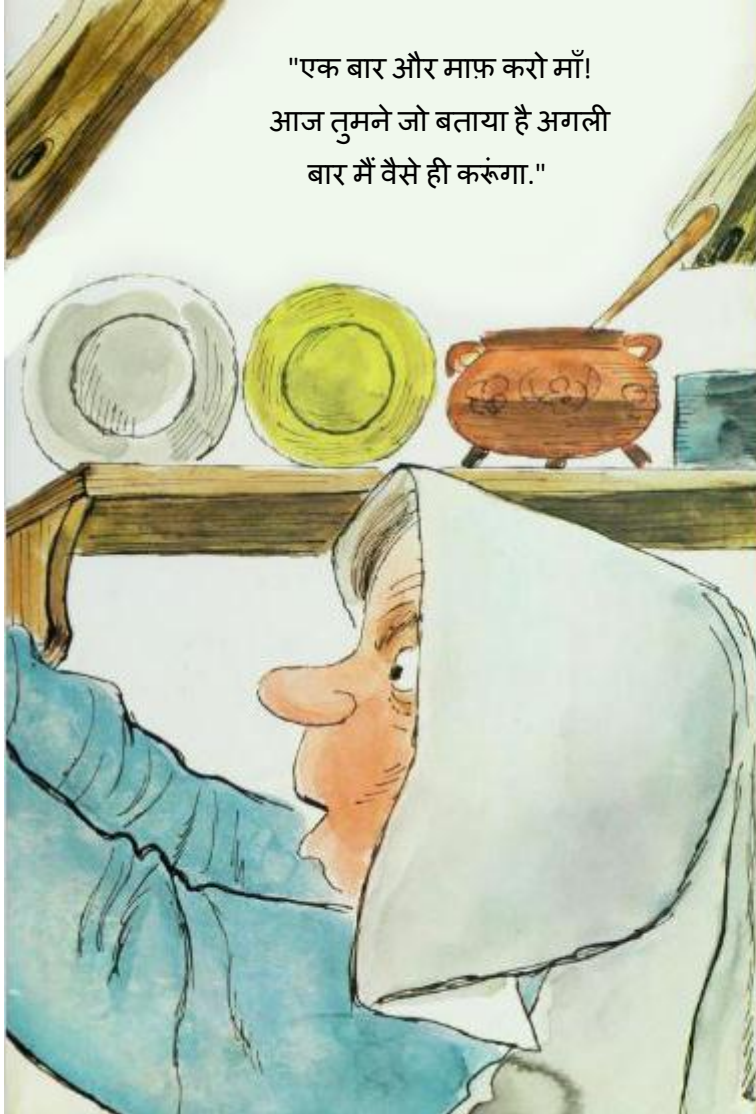
जैक हताश नहीं हुआ.
वो अभी भी खुश था.
फिर जैक को पास के शहर के
एक अस्तबल में नौकरी मिली.
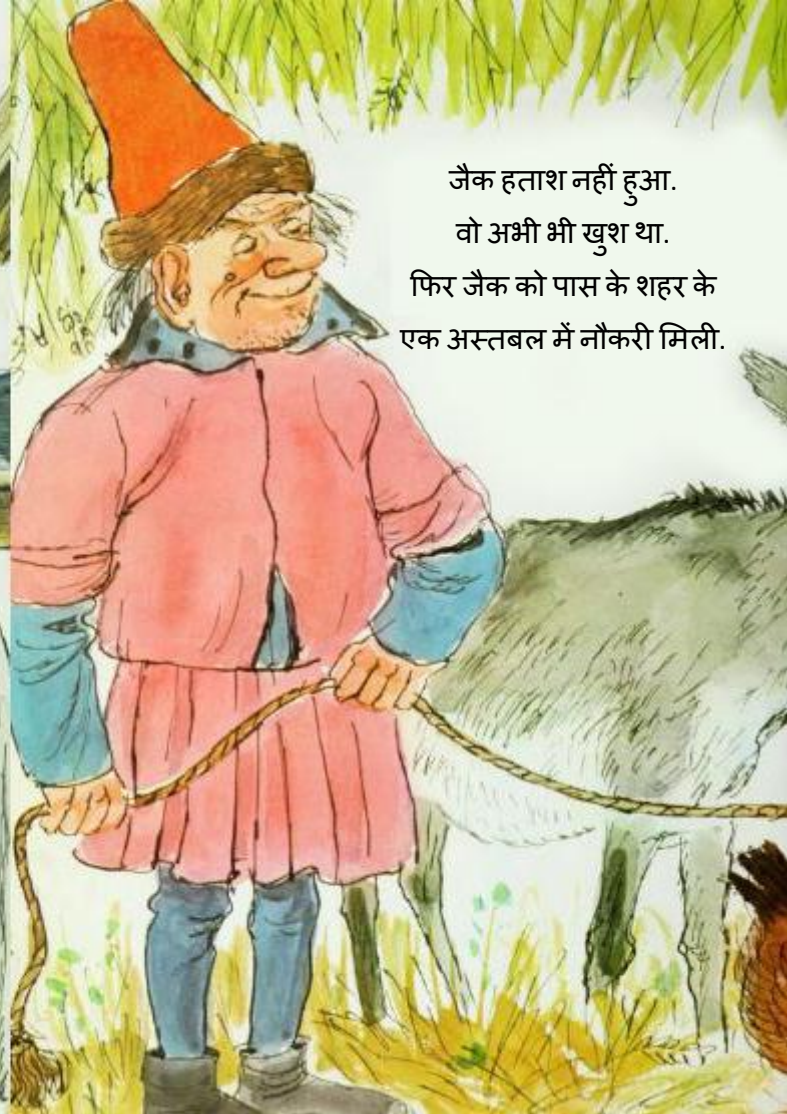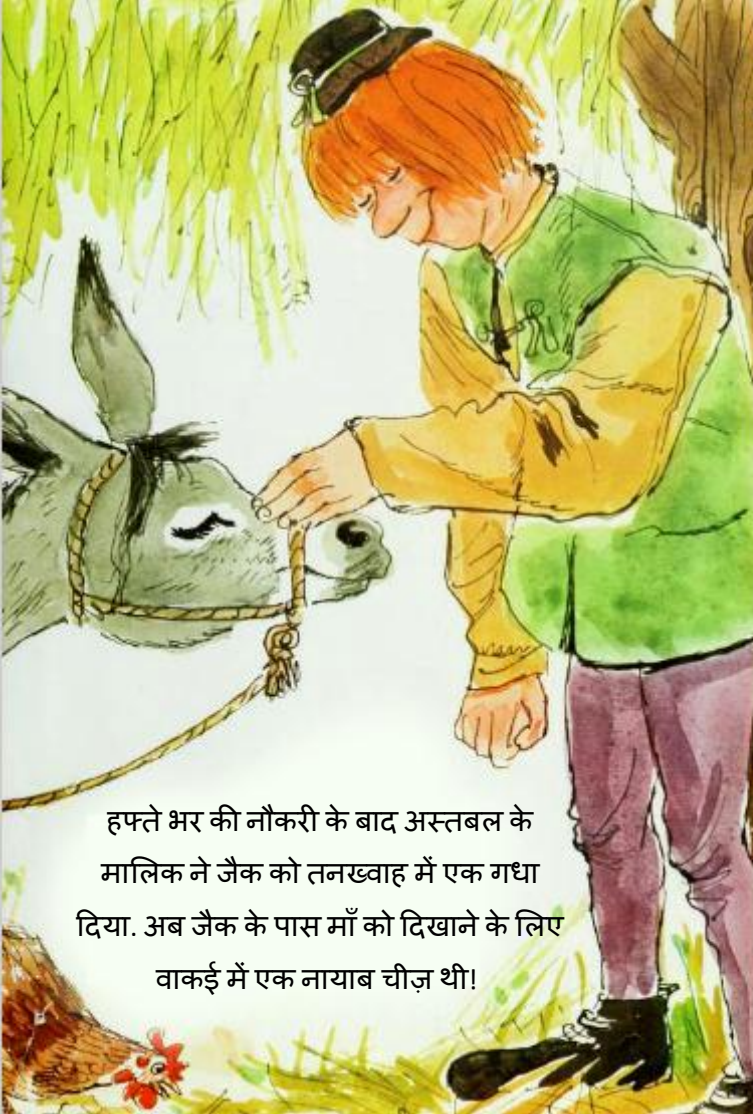
हफ्ते भर की नौकरी के बाद अस्तबल के मालिक ने जैक को तनख्वाह में एक गधा दिया. अब जैक के पास माँ को दिखाने के लिए वाकई में एक नायाब चीज़ थी!

जैक ने माँ से जो वादा किया था वो उसे याद आया. उसने गधे को अपने कंधे पर उठाया और फिर वो घर की ओर बढ़ा.
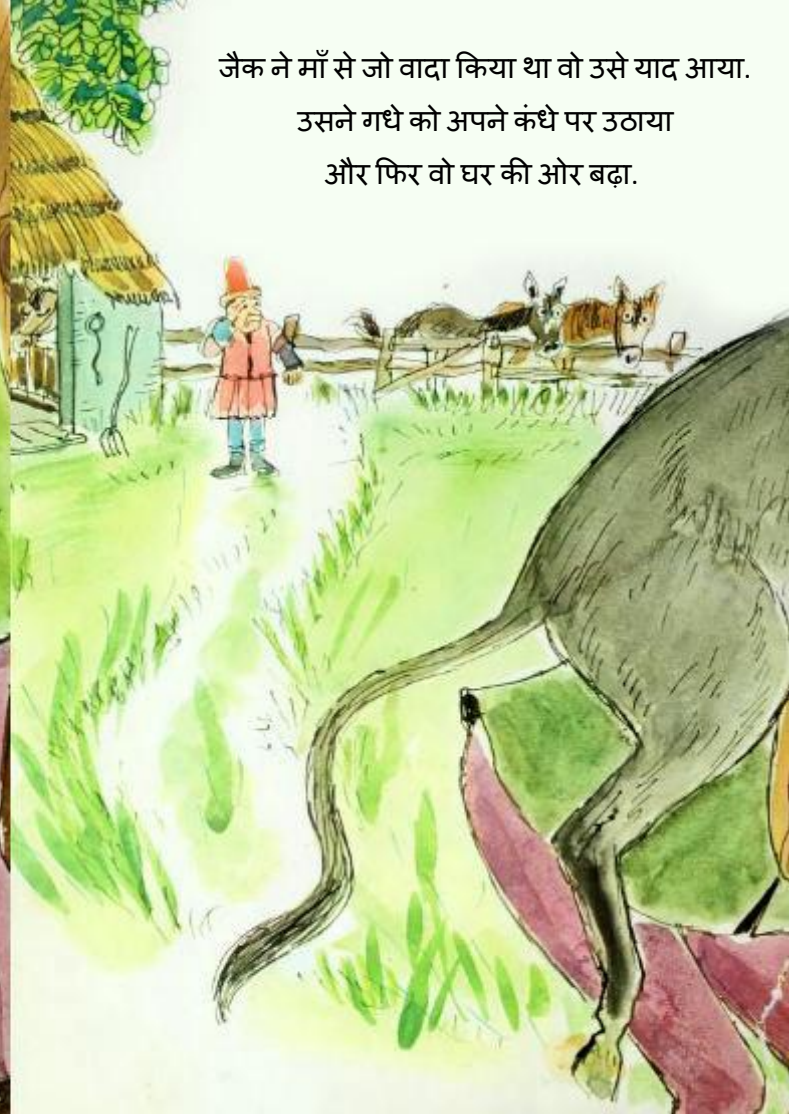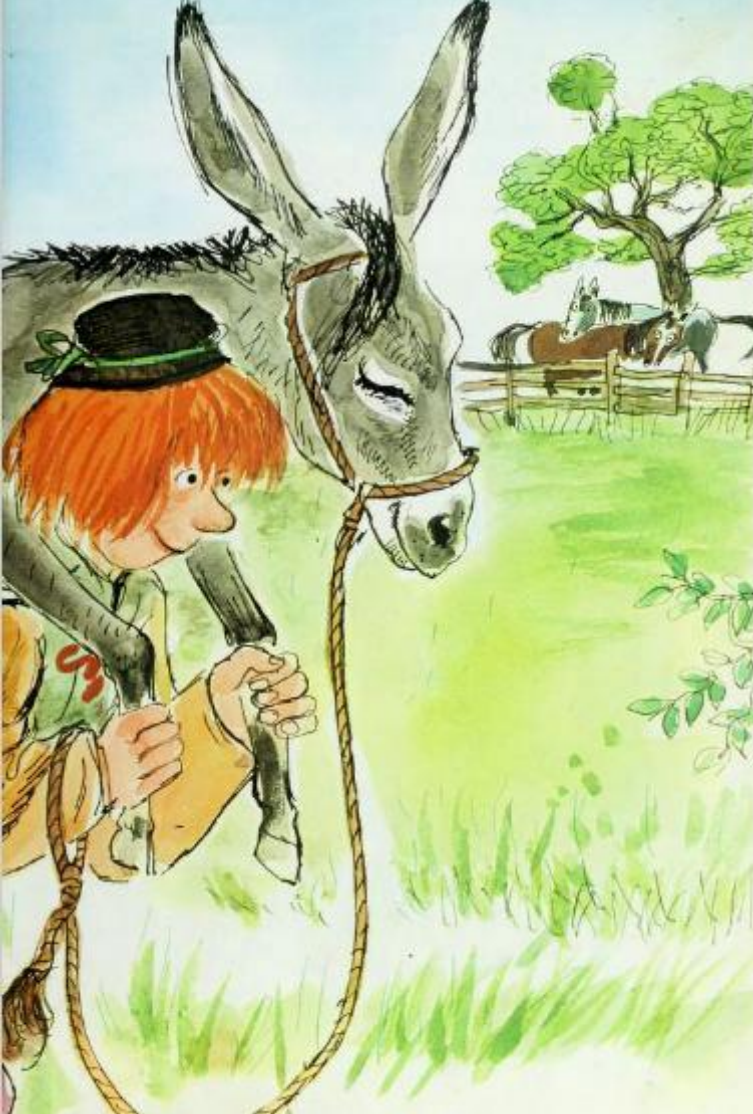
जैक के घर के रास्ते में शहर के सबसे अमीर आदमी की आलीशान कोठी थी. वो सेठ बहुत दुखी था. उसकी जोआना नाम की एक बहुत सुन्दर बेटी थी. पर जोआना न बोल सकती थी, न सुन सकती थी और न ही हंस सकती थी.

डॉक्टरों ने सेठ को बताया था कि अगर एक बार भी जोआना हंस दे, तो फिर उसके बोलने और सुनने की क्षमता वापिस आ जाएगी.

सेठ ने पूरे देश में ऐलान कराया था कि जो पहला आदमी उसकी बेटी को हंसाएगा, उसके साथ वो अपनी बेटी की शादी कर देगा.

जब जैक धूल भरी सड़क पर गधे को कंधे पर उठाए जा रहा था तो वो नज़ारा बेहद हास्यपद था. गधा, लगातार हवा में दुलत्तियाँ मार रहा था. अचानक, जैक को किसी के ज़ोर से खिलखिलाने की आवाज़ सुनाई दी.
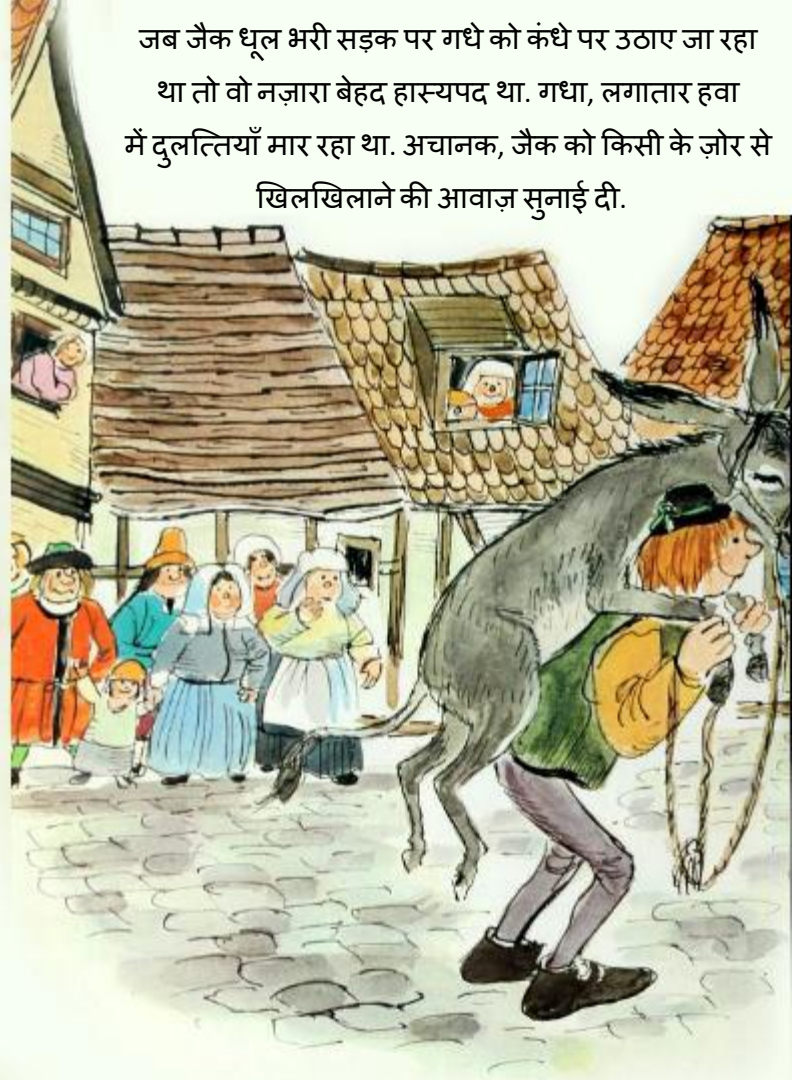
फिर जैक ने अपना सर उठाकर सेठ की कोठी की ओर देखा. वहां एक लड़की जैक की तरफ ऊँगली उठाए कुछ इशारा कर रही थी. फिर वो लड़की चिल्लाई, "पापा इधर आइए, आपने इतना ज़बरदस्त नज़ारा पूरी ज़िंदगी में कभी नहीं देखा होगा! हा-हा! हो-हो! हा-हा! हो-हो!"
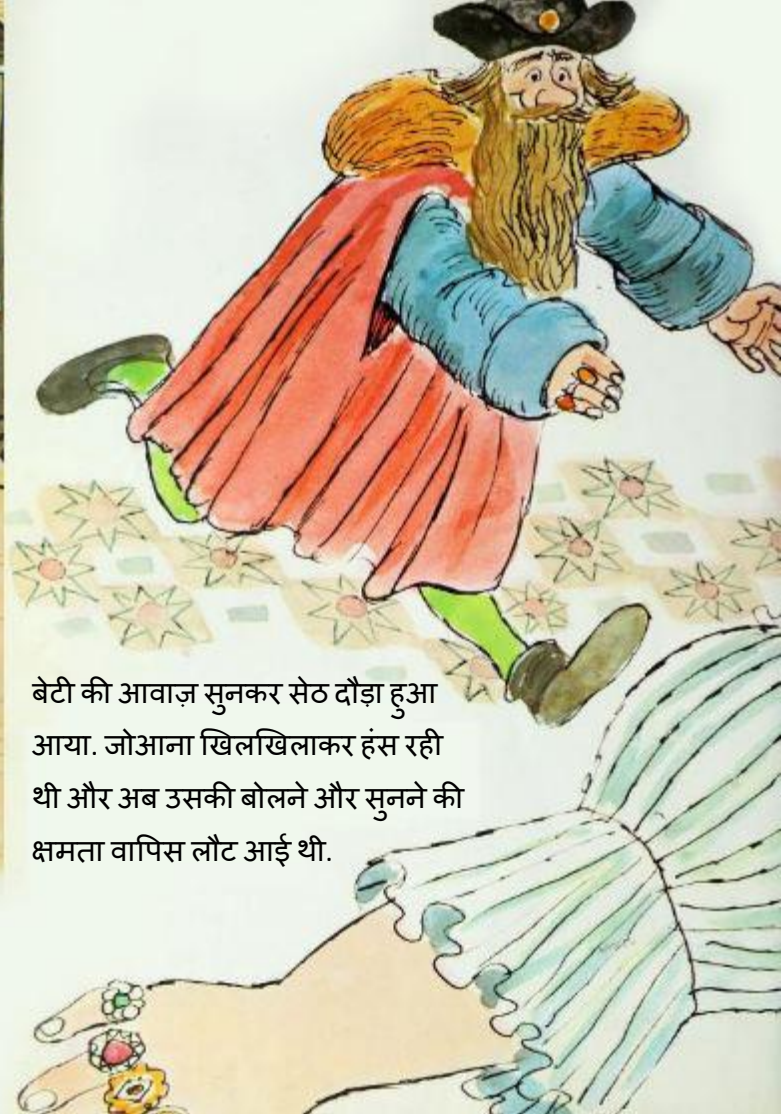
बेटी की आवाज़ सुनकर सेठ दौड़ा हुआ आया. जोआना खिलखिलाकर हंस रही थी और अब उसकी बोलने और सुनने की क्षमता वापिस लौट आई थी.

सेठ ने दौड़कर जैक को रोका. "अपने गधे को यहीं उतारो और सीधे मेरे घर चलो. तुमने मेरी बेटी की तबियत ठीक की है. क्या तुम उससे शादी करना चाहोगे?"

जैक, सुन्दर जोआना से शादी के लिए तुरंत तैयार हो गया.

उसी दिन उन दोनों की शादी हो गई.

उसके बाद वो लम्बे अर्से तक ख़ुशी-ख़ुशी एक साथ रहे.

उसके बाद जैक की माँ उनके साथ आराम और सकून से आकर रहीं. अब माँ खुश थीं क्योंकि उनका बेटा वाकई में **आज्ञाकारी जैक** था.